मनुष्य बनने की साधना करना बड़ी बात है : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

डॉ. अनिता देवी*

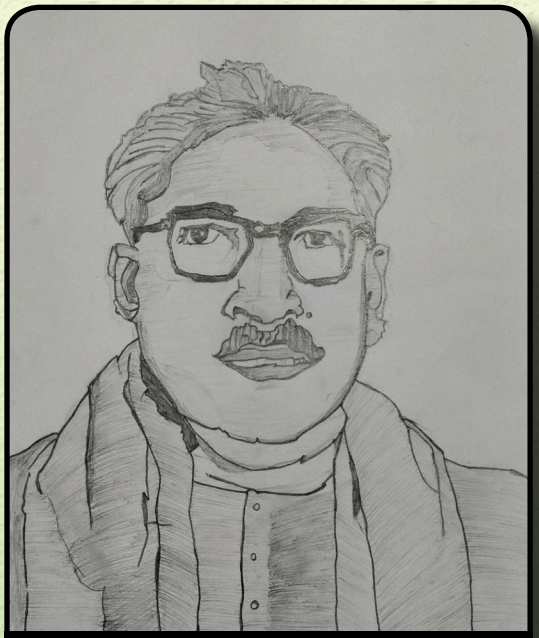

सोनाली कुमारी,
एनसीडब्ल्यूईबी, मैत्रेयी कॉलेज

किसी बहुत बड़े विद्वान् का व्यक्तिगत जीवन कैसा रहा होगा? अपने जीवन में उन्हें किस प्रकार की परिस्थितियों से जूझना पड़ा होगा, किन संघर्षों का सामना करना पड़ा होगा, आदि बातों का पता हमें उस विद्वान् से मिलकर या उनके जीवन-संघर्षों के साक्षी रहे उनके साथी-संगियों द्वारा लिखे गए संस्मरणों या साक्षात्कारों से पता चलता है। संस्मरण पढ़कर उस महान् व्यक्तित्व को भलीभांति समझा जा सकता है। अगर विद्वान् दिवंगत हैं तो संस्मरण का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। वैसे संस्मरण विधा भी साहित्य की अन्य दूसरी विधाओं जैसे- कहानी, उपन्यास रेखाचित्र आदि की तरह ही होती है।

संस्मरण अर्थात सम्यक् स्मरण, या ऐसी यादें जो सच्ची हों। संस्मरण का विषय कोई व्यक्ति, घटना, दृश्य आदि कुछ भी हो सकता है। लेकिन शर्त ये है कि वह सब सत्य पर आधारित हो, कोरी कल्पना का यहाँ कोई स्थान नहीं है, साथ ही उससे पाठक को कुछ सकारात्मक प्रेरणा भी मिले। संस्मरण में मुख्य रूप से लेखक अपनी स्मृति को आधार बनाकर घटनाओं और पात्रों को प्रस्तुत करता है। लेखक के जीवन से जुड़ी होने के कारण उन घटनाओं एवं पात्रों की प्रामाणिकता भी संदिग्ध नहीं होती। इसमें कथा का विकास आदि से अंत तक एक लय में नहीं होता, संभव है कि युवा अवस्था से पहले वृद्धा अवस्था की घटना आ जाए। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संस्मरण में लेखक की स्मृति ही मुख्य होती है। लेखक को जैसे-जैसे घटनाएं, पात्र या दृश्य याद आते हैं, वह वैसे-वैसे उनका जिक्र करता चलता है, जैसेकि 'गंगा स्नान करने चलोगे?' संस्मरण में होता है। यह संस्मरण डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के साथ बिताए गए महाविद्यालय के दिनों को याद करते हुए लिखा है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी स्वयं भी हिंदी के वरिष्ठ आलोचक, कवि एवं लेखक हैं। त्रिपाठी जी जीवनी एवं संस्मरण लेखन की अपनी खास शैली के लिए विख्यात हैं। इस संस्मरण के लेखक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी जैसे बड़े समीक्षक होने से इसका महत्त्व और बढ़ जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम हिंदी साहित्य का जाना-माना नाम है। वे हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार एवं उपन्यासकार थे। संस्मरण पढ़कर पता चलता है कि आचार्य द्विवेदी जी कम उम्र में ही बहुत बड़े विद्वान् बन गए थे। आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन अगर कोई साहित्य प्रेमी उनके महान व्यक्तित्व को जानने की जिज्ञासा रखता है तो उसे यह संस्मरण अवश्य पढ़ना चाहिए। इस संस्मरण में विश्वनाथ त्रिपाठी ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के स्वभाव, दिनचर्या, विचारधारा, अध्ययन-अध्यापन तथा उनके जीवन से जुड़ी अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी के साथ-साथ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला और अंग्रेजी भाषा के भी ज्ञाता थे, उनकी विद्वत्ता के कारण लगभग तीस वर्ष की आयु में ही

* सहायक प्रोफेसर,
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

उनको आचार्य कहकर पुकारा जाने लगा था। उनमें रचनाकार की रचना का आशय गहराई से ग्रहण करने की कमाल की क्षमता थी अतः वे रचना के मर्म को तुरंत पहचान लेते थे। उनको अपनी विद्वत्ता का जरा भी घमंड नहीं था, उनका मानना था कि विद्वान् होने से ज्यादा जरूरी मनुष्य होना होता है, विद्वान् होने से क्या होता है? पचास किताबें पढ़ ले तो कोई भी व्यक्ति विद्वान् हो जाए। मनुष्य बनने की साधना करना बड़ी बात है। किसी को दुःख न पहुंचे इसलिए अनुचित का प्रतिरोध करना भी उनके वश में नहीं था। पूरी उम्र सत्य और मानवीयता का दामन थामे रखने का खामियाजा भी द्विवेदी जी को भुगतना पड़ा। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह संस्मरण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के चरित्र की अनेक विशेषताओं की ओर इंगित करता है।

विश्वनाथ त्रिपाठी और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी काशी में जब साथ-साथ रहते थे तो गर्मियों में द्विवेदी जी कभी-कभी विश्वनाथ त्रिपाठी जी को गंगा स्नान के लिए ले जाते थे। रास्ते भर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपनी प्रिय पुस्तकों के बारे में बात करते-करते कहते ''यह पुस्तक जरूर पढ़ लो। उस लाइब्रेरी में है। मेरे पास थी, पता नहीं किसको दे दी। चलो कोई विद्यानुरागी ही होगा जो वापस नहीं कर रहा है। फिर जोर से ठठाकर हंसते, प्रायः रास्ता चलते लोग बिना देखे, सुनकर ही समझ लेते 'द्विवेदी जी' ही हैं।'' एक रात जाड़े के दिनों में लगभग सात बजे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी विश्वनाथ त्रिपाठी जी से कहते हैं कि ''गंगा स्नान करने चलोगे?'' गर्मियों में गंगा स्नान के लिए जाना तो सही था परन्तु जाड़े की रात में, वह भी रात के सात बजे, यह बात सुनकर विश्वनाथ त्रिपाठी जी हैरान थे, लेकिन बावजूद इसके, वे बिना कुछ कहे ही हजारी प्रसाद जी के साथ चल पड़े। उस दिन हजारी प्रसाद द्विवेदी विश्वनाथ त्रिपाठी को गंगा के तट पर ले जाने की बजाय पास में रह रहे प्रज्ञाचक्षु पंडित सुखलाल जी के यहाँ ले गए जो सन्देशरासक पर काम कर रहे थे। द्विवेदी जी ने पहले उनसे एक शिष्य की भांति जैन दर्शन के बारे में पूछा और उसके बाद विश्वनाथ त्रिपाठी जी का भी परिचय कराया। पंडित सुखलाल जी ने विश्वनाथ त्रिपाठी जी को विद्वान् बनने के गुर बताते हुए कहा ''पढ़ना चाहते हो तो रात में सोने के पहले कम से कम तीन घंटे पहले भोजन कर लिया करो।'' वापस लौटते हुए पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा 'हो गया न गंगा स्नान' क्योंकि पंडित सुखलाल जी उस समय के बहुत बड़े विद्वान् थे और उनसे मिलना या उनसे परिचय होना वास्तव में किसी भी गंगा स्नान से कम नहीं था।

एक अध्यापक के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी जी बताते हैं कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पंक्तियों की व्याख्या बहुत विस्तार से करते थे। कबीर के एक-एक दोहे का अर्थ बताने में वे तीन-चार घंटे लगाते थे इसलिए उनकी क्लास में पाठ्यक्रम कभी समाप्त नहीं होता था। क्लास में पढ़ाते समय अगर कोई विद्यार्थी नए अर्थ को बताता तो वे बुरा नहीं मानते थे बल्कि उसकी बहुत तारीफ करते थे ''पहली बार तारीफ करने से मन नहीं भरता, थोड़ी-थोड़ी देर पर पीरियड में तीन-चार बार तारीफ करते, बहुत ठीक.. मैंने नहीं सोचा था... मैं तो खींच खांचकर अर्थ कर रहा था... वह शिष्यों से कहते- पुस्तकें भी पढ़ो, पुस्तकालय भी पढ़ो, किताबों की दुकान पढ़ो, किताबों की दुकान पर जाकर पता चलता है कि कितना कम पढ़ा है, पढ़ने को कितना है।'' कोर्स पूरा न होने पर वे अपने विद्यार्थियों को अपने घर बुलाकर पढ़ाते थे। हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखने में विशेष रुचि रखते थे, हमेशा वह कुछ न कुछ लिखने के लिए सोचते रहते थे। वे तुलसीदास पर लिखना चाहते थे, उसके बाद उत्तरमेघ लिखना चाहते थे और उसके बाद और भी बहुत कुछ लिखना चाहते थे, स्वास्थ्य खराब होने पर भी उनकी इच्छा लिखने की रहती थी। जब उनकी आंखे सूज जाती थी तो वे अपने शिष्यों को घर बुलाकर, बोलकर कुछ लिखवाने का प्रयास करते थे।

विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने इस संस्मरण में उस घटना का भी उल्लेख भी किया है, जब 1960 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने उनकी सेवाएं समाप्त कर दी थीं। इस घटना का उनके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यह उनके साथ गलत हुआ था और इस बात का उन्हें ताउम्र मलाल रहा। विश्वनाथ त्रिपाठी जी लिखते हैं कि ''द्विवेदी जी में अगर अन्याय से जूझने की भी प्रवृत्ति होती तो वह तिलक या आचार्य नरेंद्र देव बनते।'' स्त्रियों का सौन्दर्य उनके लिए किसी अप्सरातुल्य न होकर देवी पार्वती तुल्य होता। उनके

मन में स्त्रियों के प्रति विशेष आदर भाव था। अगर कोई व्यक्ति किसी महिला के चरित्र की निंदा करे। दोपहर के भोजन के बाद सोते में जगा दे या कोई रविंद्र नाथ ठाकुर, मदन मोहन मालवीय, गांधी जी और जवाहरलाल नेहरू के बारे में हल्की बात करे तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नाराज हो जाते थे। वैसे तो वे प्राचीन साहित्य के ज्ञाता थे लेकिन आधुनिक साहित्यकार भी उनको बहुत मानते थे। इसलिए उनकी शव यात्रा में आधुनिक साहित्यकारों की संख्या पुराने साहित्यकारों से भी ज्यादा थी। वे नई पीढ़ी का सम्मान करते थे। उनका मानना था कि ''यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कोई घटना कब घटी, किसी व्यक्ति की उम्र क्या है? वह बूढ़ा है या किशोर। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी सोच या उसका दृष्टिकोण होता है। नयापन आधुनिकता का पर्याय नहीं है। नया पुरातन पंथी भी हो सकता है। प्राचीन साहित्य को भी आधुनिक दृष्टि से देखा जा सकता है।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रत्येक व्यक्ति में केवल गुण देखते थे और मनुष्य के गुणों का ही बखान करते थे। उनका मानना था कि तारीफ कर देने से क्या बिगड़ जाता है, ''मनुष्य कोई रचना थोड़ी ना है कि उसकी समीक्षा की जाए।'' द्विवेदी जी बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और श्रीमंतों के साहित्य प्रेम को दिखावा और राजनीति से प्रेरित मानते थे। उन्होंने उस समय के प्रसिद्ध साहित्यकार अज्ञेय जी को एक काव्य-पत्र भी लिखा था जिसमें एक कविता के माध्यम से कहा था कि ''क्या हो गया बड़े-बड़े कवियों की कविताओं से, क्या दमन, शोषण, अन्याय कुछ भी रुक पाया। नहीं रुक पाया।'' उनका मन इस बात से दुखी होता था कि साहित्य समाज को नहीं बदल सकता। उनके साथ घटी घटनाओं के कारण ही उनका सत्य पर से भरोसा उठ गया था क्योंकि उनको लगता था कि इस संसार में 'असत्य सत्य से कम शक्तिशाली नहीं है।' काशी हिंदू विश्वविद्यालय का पद छोड़ने के बाद द्विवेदी जी के मन में सत्य के प्रति अविश्वास पैदा हुआ, उनमें असुरक्षा की भावना बढ़ गई क्योंकि उन्होंने ''भारतीय व्यवस्था के दो मुंहेपन को देखा था और इस बात को वे कभी भुला नहीं पाए।'' विश्वनाथ त्रिपाठी ने महसूस किया कि इस घटना से पहले और बाद के हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के मनोबल में बहुत अंतर आ गया था। विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने इस संस्मरण में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को लेकर अनेक ऐसे स्मृति चित्रों का उल्लेख किया है जो पाठक के मन-मस्तिष्क पर एक अलग छाप छोड़ते हैं और पाठक का मन हिंदी के महान साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रति द्रवित हो उठता है।

'गंगा स्नान करने चलोगे?' संस्मरण खड़ी बोली में लिखा गया है। विषय के अनुसार भाषा और वाक्य संरचना का चयन किया गया है। शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग संस्मरण को प्रभावशील बनाता है। ट्रेन, पीरियड, गाड़ी, क्लास आदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग, उल्लासित, प्रसन्न, शक्तिशाली, प्रवृति आदि तत्सम शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ तद्भव, देशज शब्दों का प्रयोग भी इस संस्मरण में मिलता है। यथास्थान मुहावरों/लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है लेकिन बहुत कम। साहित्यिक भाषा का पुट होने से इस संस्मरण के देशकाल और वातावरण का पता चलता है। विश्वनाथ त्रिपाठी जी की भाषा का सरलपन पाठकों को अपनी ओर खींचता है। भाषा में कहीं भी बनावटीपन नजर नहीं आता। कुल मिलाकर यह संस्मरण पाठक को भावविभोर कर देता है।

सन्दर्भ सूची

1. विश्वनाथ त्रिपाठी, 'गंगा स्नान करने चलोगे?' सं., डॉ. राम किशोर यादव, हिंदी गद्य : उद्भव और विकास, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद- 201102, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या 89-96

❑❑❑❑